दीपावली

2020

धार्मिक मान्यता

दीपावली का धार्मिक महत्व हिंदू दर्शन, क्षेत्रीय मिथकों, किंवदंतियों, और मान्यताओं पर निर्भर करता है।

लक्ष्मी अवतरण - कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मां लक्ष्मी समुद्र मंथन द्वारा धरती पर प्रकट हुई थीं। दीपावली के त्योहार को मनाने का सबसे खास कारण यही है। इस पर्व को मां लक्ष्मी के स्वागत के रूप में मनाते हैं और हर घर को सजाया संवारा जाता है ताकि मां का आगमन हो।

भगवान राम की विजय - रामायण के अनुसार इस दिन जब भगवान राम, सीताजी और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या वापिस लौटे थे। उनके स्वागत में पूरी अयोध्या को दीप जलाकर रौशन किया गया था।

नरकासुर वध - भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध कर 16000 स्त्रियों को इसी दिन मुक्त करवाया था। इसी खुशी में दीपावली का त्यौहार दो दिन तक मनाया गया और इसे विजय पर्व के नाम से जाना गया।

पांडवों की वापसी - महाभारत के अनुसार जब कौरव और पांडव के बीच होने वाले चौसर के खेल में पांडव हार गए, तो उन्हें 12 वर्ष का अज्ञात वास दिया गया था। पांचों पांडव अपना 12 साल का वनवास समाप्त कर इसी दिन वापस लौटे थे। उनके लौटने की खुशी में दीप जलाकर खुशी के साथ दीपावली मनाई गई थी।

विक्रमादित्य का राजतिलक - राजा विक्रमादित्य के राजतिलक का प्रसंग भी इसी दिन से जुड़ा हुआ है। बताया जाता है कि राजा विक्रमादित्य का राजतिलक इस दिन किया गया था, जिससे दिवाली का महत्व और खुशियों दुगुनी हो गईं।

अन्य मान्यताएं

आर्य समाज - स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन की गई थी। इस कारण भी दीपावली का त्योहार विशेष महत्व रखता है।

जैन धर्म - दीपावली का दिन जैन संप्रदाय के लोगों के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जैन धर्म इस पर्व को भगवान महावीर जी के मोक्षदिवस के रूप में मनाता है। ऐसा माना जाता है कि कार्तिक मास की अमावस्या के दिन ही भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

सिक्ख धर्म - सिख धर्म के लिए भी दीपावली बहुत महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन को सिख धर्म के तीसरे गुरु अमरदास जी ने लाल पत्र दिवस के रूप में मनाया था जिसमें सभी श्रद्धालु गुरु से आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। इसके अलावा सन् 1577 में अमृतसर के हरिमंदिर साहिब का शिलान्यास भी दीपावली के दिन ही किया गया था।

10 सन् 1619 में सिक्ख गुरु हरगोबिन्द जी को ग्वालियर के किले में 52 राजाओं के साथ मुक्त किया जाना भी इस दिन की प्रमुख ऐतिहासिक घटना रही है। इसलिए इस पर्व को सिक्ख समाज बंदी छोड़ दिवस के रूप में भी मनाता हैं। इन राजाओं व हरगोबिंद सिंह जी को मुगल बादशाह जहांगीर ने नजरबंद किया हुआ था।

वैज्ञानिक महत्त्व

हम जानते हैं की ये त्यौहार संधिकाल में आता है, मतलब इस समय बारिश का मौसम जाने,और ठंड का मौसम आने को होता है।इस समय धान की फसल आती है और पहले समय में इस समय धान वर्ष भर उपयोग के लिए घर लाया जाता था। इसके लिए साफ सफाई आवश्यक होती थी।
इस समय बारिश समाप्त होती है।बारिश की वजह से सीलन,नमी वगैरह आम बात है।बारिश के चलते घरों को रंग रोगन भी फीका हो जाता है।इसी कारण हम साफ सफाई और पुताई करते हैं ।ताकि सीलन –नमी से भी छुटकारा मिल जाए और घर फिर से पहले की तरह दमकने लगे।

बारिश के मौसम में पानी के जमाव की वजह से मच्छर ,मक्खी और छोटे छोटे जीव जंतु भी ज्यादा पनप जाते हैं जो हमारे द्वारा की गई साफ सफाई से दूर हो जाते हैं। हम घरों को ढेर सारे दीपकों से रोशन कर देते हैं ।इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

साथ ही हम इस पर्व पर कई तरह के विशेष व्यंजन बनाकर खाते हैं। इसका कारण यह है कि जब बारिश का मौसम जाता है कई सारी बीमारियां पनपने की संभावना ज्यादा होती है, और यह सारे व्यंजन हमारे शरीर की इम्युनिटी क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं ।अन्य मौसम की तुलना में इस समय हमारा शरीर भी इस तरह के भोजन को पचाने में अनुकूल होता है।

पूजन सामग्री

धूप बत्ती (अगरबत्ती), चंदन , कपूर, केसर , यज्ञोपवीत 5 , कुंकु , चावल, अबीर, गुलाल, अभ्रक, हल्दी , सौभाग्य द्रव्य-मेहंदी, चूड़ी, काजल, पायजेब, बिछुड़ी आदि आभूषण। नाड़ा (लच्छा), रुई, रोली, सिंदूर, सुपारी, पान के पत्त , पुष्पमाला, कमलगट्टे, निया खड़ा (बगैर पिसा हुआ) , सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, कुशा व दूर्वा (कुश की घांस) , पंच मेवा , गंगाजल , शहद (मधु), शकर , घृत (शुद्ध घी) , दही, दूध, ऋतुफल, (गन्ना, सीताफल, सिंघाड़े और मौसम के फल जो भी उपलब्ध हो), नैवेद्य या मिष्ठान्न (घर की बनी मिठाई), इलायची (छोटी) , लौंग, मौली, इत्र की शीशी , तुलसी पत्र, सिंहासन (चौकी, आसन) , पंच-पल्लव (बड़, गूलर, पीपल, आम और पाकर के पत्ते), औषधि (जटामॉसी, शिलाजीत आदि) , लक्ष्मीजी का पाना (अथवा मूर्ति), गणेशजी की मूर्ति , सरस्वती का चित्र, चाँदी का सिक्का , लक्ष्मीजी को अर्पित करने हेतु वस्त्र, गणेशजी को अर्पित करने हेतु वस्त्र, अम्बिका को अर्पित करने हेतु वस्त्र, सफेद कपड़ा (कम से कम आधा मीटर), लाल कपड़ा (आधा मीटर), पंच रत्न (सामर्थ्य अनुसार), दीपक, बड़े दीपक के लिए तेल, ताम्बूल (लौंग लगा पान का बीड़ा) , धान्य (चावल, गेहूँ) , लेखनी (कलम, पेन), बही-खाता, स्याही की दवात, तुला (तराजू) , पुष्प (लाल गुलाब एवं कमल) , एक नई थैली में हल्दी की गाँठ, खड़ा धनिया व दूर्वा, खील-बताशे, तांबे या मिट्टी का कलश और श्रीफल।

लक्ष्मी पूजन

दीपावली को अपने घर के ईशानकोण में कमलासन पर मिट्टी या चांदी की लक्ष्मी की प्रतिमा को विराजित करें। पूजनकर्ता स्नान करके कोरे अथवा धुले हुए शुद्ध वस्त्र पहनें, माथे पर तिलक लगाएँ और शुभ मुहूर्त में पूजन शुरू करें। इस हेतु शुभ आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पूजन करें। अपनी जानकारी हेतु पूजन शुरू करने के पूर्व प्रस्तुत पद्धति एक बार जरूर पढ़ लें।

पूजा सामग्री का शुध्दिकरण :
बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अनामिका से निम्न मंत्र बोलते हुए अपने ऊपर एवं पूजन सामग्री पर जल छिड़कें-

ॐ अ-पवित्र-ह पवित्रो वा सर्व-अवस्थाम् गतोअपि वा ।
य-ह स्मरेत् पुण्डरी-काक्षम् स बाह्य-अभ्यंतरह शुचि-हि ॥
पुन-ह पुण्डरी-काक्षम् पुन-ह पुण्डरी-काक्षम्, पुन-ह पुण्डरी-काक्षम् ।

आसन का शुध्दिकरण :
निम्न मंत्र से अपने आसन पर उपरोक्त तरह से जल छिड़कें-
ॐ पृथ्वी त्वया घता लोका देवि त्वम् विष्णु-ना घृता ।
त्वम् च धारय माम् देवि पवित्रम् कुरु च-आसनम् ॥

लक्ष्मी पूजन

आचमन कैसे करें:
दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें-

ॐ केशवाय नम-ह स्वाहा,
ॐ नारायणाय नम-ह स्वाहा,
ॐ माधवाय नम-ह स्वाहा ।

अंत में इस मंत्र का उच्चारण कर हाथ धो लें-
ॐ गोविन्दाय नम-ह हस्तम् प्रक्षाल-यामि ।

दीपक :
दीपक प्रज्वलित करें (एवं हाथ धोकर) दीपक पर पुष्प एवं कुंकु से पूजन करें-
दीप देवि महादेवि शुभम् भवतु मे सदा ।
यावत्-पूजा-समाप्ति-हि स्याता-वत् प्रज्वल सु-स्थिरा-हा ॥
(पूजन कर प्रणाम करें)

लक्ष्मी पूजन

स्वस्ति-वाचन :
निम्न मंगल मंत्र बोलें-
ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्ध-श्रवा-हा स्वस्ति न-ह पूषा विश्व-वेदा-हा ।
स्वस्ति न-ह ताक्षर्यो अरिष्ट-नेमि-हि स्वस्ति नो बृहस्पति-हि-दधातु ॥

द्-यौ-हौ शांति-हि अन्-तरिक्ष-गुम् शान्-ति-हि पृथिवी शान्-ति-हि-आप-ह ।
शान्-ति-हि ओष-धय-ह शान्-ति-हि वनस्-पतय-ह शान्-ति-हि-विश्वे-देवा-हा

शान्-ति-हि ब्रह्म शान्-ति-हि सर्व(गुम्) शान्-ति-हि शान्-ति-हि एव शान्-ति-हि सा
मा शान्-ति-हि। यतो यत-ह समिहसे ततो नो अभयम् कुरु ।
शम्-न्न-ह कुरु प्रजाभ्यो अभयम् न-ह पशुभ्य-ह। सु-शान्-ति-हि-भवतु॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्-महा-गण-अधिपतये नम-ह ॥

संकल्प :
अपने दाहिने हाथ में जल, पुष्प, अक्षत, द्रव्य आदि लेकर श्री महालक्ष्मीजी अन्य ज्ञात-अज्ञात देवीदेवताओं के पूजन का संकल्प करें-

हरिॐ तत्सत् अद्यैत अस्य शुभ दीपावली बेलायाम् मम महालक्ष्मी-प्रीत्यर्थम् यथासंभव द्रव्यै-है यथाशक्ति उपचार द्वारा मम् अस्मिन प्रचलित व्यापरे उत्तरोत्तर लाभार्थम् च दीपावली महोत्सवे गणेश, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली, लेखनी कुबेरादि देवानाम् पूजनम् च करिष्ये।
(अब जल छोड़ दें।)

www.hindimedia.in

लक्ष्मीजी की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रुप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ओम जय लक्ष्मी माता॥

www.hindimedia.in

मुहूर्त

इस बार धनतेरस के दिन शुक्र प्रदोष और धन त्रयोदशी का महासंयोग बन रहा है। इस दिन बह्म व सिद्धि योग रहेगा। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस दिन जो भी शुभ कार्य या खरीददारी की जाएगी वह समृद्धिकारक होगी। घरों में पूजन का उत्तम मुहूर्त वृष लग्न में शाम 6 बजकर 12 मिनट से 8 बजकर 28 मिनट रहेगा।

धनतेरस का मुहूर्त शाम 5 बजकर 34 मिनट से लेकर शाम 6 बजकर 1 मिनट तक है। इस दिन प्रदोष काल शाम 5 बजकर 28 मिनट से लेकर रात 8 बजकर 7 मिनट तक है। वृषभ काल मुहूर्त शाम 5 बजकर 34 मिनट से लेकर शाम 7 बजकर 29 मिनट तक है।

14 नवंबर को 1 बजकर 16 मिनट तक चतुर्दशी रहेगी और फिर अमावस्या शुरु हो जाएगी.

लक्ष्मी पूजा का मुहूर्त :
शाम 5 बजकर 30 मिनट से लेकर शाम 7 बजकर 25 मिनट तक का है।
प्रदोष काल मुहूर्त शाम 5 बजकर 27 मिनट से रात 8 बजकर 6 मिनट तक रहेगा।
वृषभ काल मुहूर्त शाम 5 बजकर 30 मिनट से शाम 7 बजकर 25 मिनट तक है।

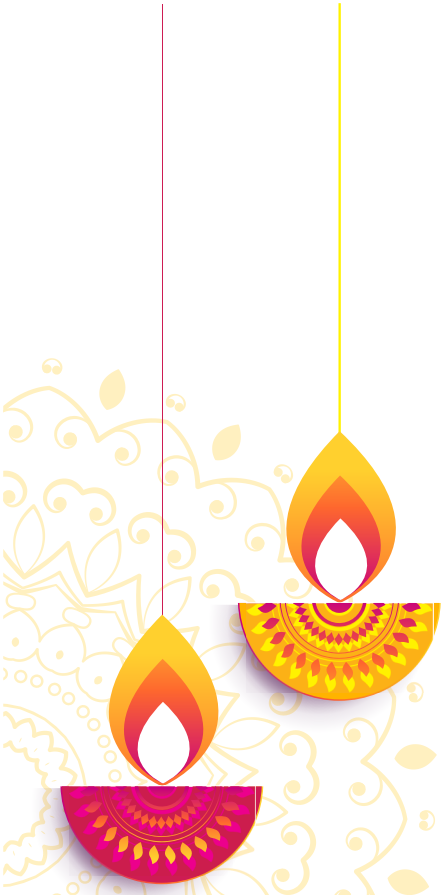

शुभ दीपावली

www.hindimedia.in